सिफ्सा SIFPSA

mSehat
What gets measured, gets managed

स्वास्थ्य संवर्धन

सिफ्सा की नवीन परियोजनाओं और मानव हित की कहानियों पर आधारित मासिक समाचार पत्रिका

जून 2016, अंक –1

राज्य परिवार नियोजन सेवा अभिनवीकरण परियोजना एजेंसी (सिफ्सा)

भारत सरकार, यू.एस.ए.आई.डी. और उत्तर प्रदेश सरकार का एक संयुक्त उपक्रम है जोकि प्रदेश में अभिनव परिवार नियोजन सेवाएं परियोजना (आई.एफ.पी.एस.) संचालित कर रहा है। पिछले दो दशकों से सफल कार्यान्वयन द्वारा सिफ्सा ने वैश्विक क्षेत्र में अपनी पहचान बनाई है और परिवार नियोजन, प्रजनन एवं बाल स्वास्थ्य के क्षेत्र में अभिनव रणनीतियों एवं सर्वोत्तम प्रथाओं के साथ अनवरत काम कर रहा है।

स्वास्थ्य संवर्धन समाचार पत्रिका

सिफ्सा द्वारा क्रियान्वित नवीन परियोजनाओं/कार्यक्रमों तथा सर्वोत्तम प्रथाओं/सफलता की कहानियों को अपने पाठकों से साझा करने का एक अभिनव प्रयास है। इस पत्रिका के माध्यम से सिफ्सा द्वारा संचालित कार्यक्रमों से क्षेत्र, समुदाय एवं चिकित्सा इकाइयों के स्तर से प्राप्त रोचक कहानियों को भी समाहित किया जा रहा है।

.....सम्पादक की कलम से

मुझे "स्वास्थ्य संवर्धन"– सिफ्सा की एक मासिक समाचार पत्रिका को प्रस्तुत करते हुए बेहद खुशी हो रही है। इस पत्रिका में सिफ्सा द्वारा संचालित विभिन्न अभिनव परियोजनाओं और कार्यक्रमों का उल्लेख किया जा रहा है। इस माह के अंक में हम दो महत्वपूर्ण परियोजनाओं के बारे में एवं उनसे सम्बन्धित सफलता की कहानियों पर लेख प्रस्तुत कर रहे हैं।

पहला लेख "एम–सेहत" के सम्बन्ध में है, जो एक प्रीलोडेड मोबाइल ऐप है जो लाभार्थी आधारित अनुसरण में मातृ एवं शिशु से सम्बन्धित आंकड़ों को वास्तविक समय मे संकलित करने में सहयोग प्रदान करता है। यह गृह भ्रमण के दौरान क्षेत्रीय स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं के द्वारा परामर्श एवं जच्चा बच्चा की देख–रेख को प्रभावी तरीके से निष्पादित एवं सुदृढ़ करने का कार्य भी करता है तथा दूसरा लेख "सेहत संदेशवाहिनी" के सम्बन्ध में है, जो उत्तर प्रदेश सरकार की एक अनूठी पहल "सेहत सन्देश वाहिनी" वीडियो वैन परियोजना है, जो राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के अन्तर्गत उपलब्ध कराई जा रही स्वास्थ्य सेवाओं एवं सुविधाओं के बारे में जनता को जागरूक करने के लिए उत्तर प्रदेश के दूरस्थ ग्रामों में सिफ्सा द्वारा संचालित की जा रही है।

इस समाचार पत्र के अंतिम पृष्ठ में एक भित्तिचित्र खंड शुरू कर रहे हैं, जिसमें व्यक्तिगत रचनात्मकता विभिन्न रूपों में जैसे कविता, स्केच, चित्रकला या दो पंक्तियाँ, जो स्वास्थ्य की बेहतरी से सम्बन्धित हों, को शामिल किया जायेगा।

यह समाचार पत्रिका पाठकों को सिफ्सा द्वारा संचालित रोचक परियोजनाओं से अवगत करने का एक ईमानदार प्रयास है जिसमें कुछ सफलता की कहानियों और सर्वोत्तम प्रथाओं को भी समाहित किया गया है।

आशा है कि आप समाचार पत्र को पढ़ कर उतना ही आनंदित होंगे जितना हम इसे प्रस्तुत करके हो रहे हैं। कृपया अपने विचार एवं टिप्पणियों को वेबसाईट editornh@sifpsa.org पर भेजें।

आलोक कुमार, आई.ए.एस.
अधिशासी निदेशक–सिफ्सा

संक्षिप्त समाचार

- सिफ्सा द्वारा प्रदेश के जिला चिकित्सालयों को परिवार नियोजन क्लीनिकल प्रशिक्षण केन्द्रों "हौसला प्रशिक्षण केन्द्रों (एच.टी.सी.)" के रूप मे विकसित किया जा रहा है, जो प्रदेश में स्वास्थ्य के बुनियादी ढांचे को व्यापक रूप से सुदृढ़ करेगा।
- सिफ्सा द्वारा 'सम्पूर्णा परियोजना' का संचालन किया जा रहा है, जो राज्य में महिलाओं में समस्त संचारी रोगों (बच्चेदानी के मुख एवं स्तन कैंसर सहित) की स्क्रीनिंग एवं उपचार के लिए समर्पित है।
- सिफ्सा क्लीनिकल आउटरीच टीमों (सी.ओ.टी.) का गठन कर रही है, जो परिवार नियोजन की समस्त सेवाएं उपलब्ध कराएगी, जिसमें महिला नसबंदी (लैप्रो/मिनीलैप), बिना चीरा–बगैर टाँके की पुरुष नसबन्दी (एन.एस.वी.) और अंतर्गर्भाशयी गर्भनिरोधक डिवाइस (आई.यू.सी.डी.) उपलब्ध होगी। यह कुछ चयनित जनपदों में हौसला साझेदारी योजना के अन्तर्गत चलायी जाएगी, जो उत्तर प्रदेश में परिवार नियोजन की अपूरित मांग को पूरा करने में अहम योगदान देगी।

अधिक जानकारी के लिए आगामी अंकों को देखें।

एम सेहत – एक नया सवेरा

एम–सेहत एक प्रीलोडेड मोबाइल ऐप है जो लाभार्थी आधारित अनुसरण में मातृ एवं शिशु से सम्बन्धित आकडों को वास्तविक समय में संकलित करने में सहयोग प्रदान करता है। यह गृह भ्रमण के दौरान क्षेत्रीय स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं के द्वारा परामर्श एवं जच्चा बच्चा की देख–रेख को प्रभावी तरीके से निष्पादित एवं सुदृढ करने का कार्य भी करता है।

स्वास्थ्य के क्षेत्र में समाज का पहला संपर्क अनिवार्य रूप से क्षेत्रीय स्वास्थ्य कार्यकर्त्ताओं से होता है। ये समुदाय एवं सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली के मध्य एक कड़ी का कार्य करते हैं तथा जीवन रक्षक स्वास्थ्य प्रणाली को अपनाने हेतु समाज को रजामंद करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते है। उत्तर प्रदेश में लगभग 23,000 ए.एन.एम. तथा 1,50,000 से अधिक आशा (मान्यता प्राप्त सामाजिक स्वास्थ्य कार्यकर्त्ता) हैं, जो कि प्रजनन, मातृ स्वास्थ्य, नवजात शिशु, बाल एवं किशोर स्वास्थ्य (आर.एम.एन.सी.एच.ए) की सेवाओं में सुधार लाने एवं ग्रामीण अंचलों तक सेवाओं की उपलब्धता सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं।

स्वास्थ्य सेवाओं को और अधिक प्रभावशाली एवं इनके परिणामों में बेहतर सुधार के लिए अनुभव किया गया कि क्षेत्रीय स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं को जटिल एवं ढोने में समस्या वाले वज़नी मैनुअल, रजिस्टर एवं अन्य प्रपत्रों से मुक्त किया जाना आवश्यक है। इस प्रकार एम.सेहत मोबाइल ऐप द्वारा इन स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं को सशक्त कर प्रभावी योजना, प्रबंधन तथा दिन–प्रतिदिन के कार्य के निष्पादन एवं बेहतर प्रदर्शन करने में सशक्त किया गया है। एम.सेहत का लक्ष्य क्षेत्रीय स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं का ज्ञानवर्धन करते हुए सशक्त कर प्रदेश में मातृ, नवजात, शिशु मृत्यु दर एवं कुल प्रजनन दर मे तेजी से कमी लाना है।

एम. सेहत मोबाइल ऐप में अलग–अलग स्वास्थ्य कार्यकत्ताओं को अलग अलग एप्लीकेशन की सुविधा प्रदान की गयी है। जैसे कि आशा हेतु अलग एप्लीकेशन तथा ए.एन.एम. के लिए अलग एप्लीकेशन तथा तीसरे एप्लीकेशन का उपयोग ब्लाक, जिला एवं राज्य स्तर पर कार्यक्रम से जुड़े प्रबन्धकों द्वारा अपने टेबलेट अथवा कम्पयूटर पर प्रगति को देखने हेतु किया जाता है। एक चौथी प्रकार के एप में लाभार्थी के पंजीकृत मोबाइल पर एस. एम.एस. द्वारा अलर्ट एवं स्वास्थ्य सेवाओं / तिथियों को याद दिलाने हेतु उपयोग किया जा रहा है। यह गतिविधि प्रदेश के चयनित पांच जनपदों– बरेली, कन्नौज, मिर्जापुर, सीतापुर एवं फैजाबाद में शुरू की गयी है, जिसके अन्तर्गत 10000 आशा, 2000 ए.एन.एम. तथा 300 चिकित्सा अधिकारी / प्रभारी चिकित्सा अधिकारी सम्मलित किए गए हैं।

क्षेत्रीय स्वास्थ्य कार्यकर्त्ता के विचार :

सुधावती : आशा संगिनी, ग्रामः रमपुरा, विकास खण्डः छिबरामऊ, जिलाः कन्नौज

सुधावती ने हाईस्कूल ही पास किया था तथा केवल 17 बसंत ही देखे थे तभी उसका विवाह कर दिया गया। अतः कम उम्र में विवाह के दबाव ने नवयुवती के शिक्षा ग्रहण करने के सारे सपनो तथा उसकी ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा को कुचल दिया। लेकिन सुधावती की शिक्षा के प्रति दृढ़ संकल्पता एवं प्रतिबद्धता से प्रभावित होकर उसके पति ने उसकी शिक्षा जारी रखने का समर्थन किया और सुधावती ने सभी परिवारिक दबावों के बीच एम.काम. की डिग्री उत्तीर्ण की। उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बावजूद ससुराल वालों ने सुधावती को नौकरी करने के लिए समर्थन नही दिया। अतः सुधावती ने अपने पारवारिक कर्तव्यों को निभाने के लिए नौकरी को तिलांजलि दे दी।

वर्ष 2005 में राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के अन्तर्गत ग्राम में आशा के चयन की प्रक्रिया शुरू की गयी, तो उसकी इच्छा पुनः जाग उठी, लेकिन उसके परिवार वालों ने चयन प्रक्रिया में आवेदन करने की अनुमति प्रदान नहीं की। वर्ष 2007 में जब उसके गांव की आशा ने त्यागपत्र दिया तब सुधावती ने अपने ग्राम के ग्राम प्रधान से सम्पर्क किया एवं प्रधान ने उसकी योग्यता के आधार पर आशा के पद पर चयन हेतु सिफारिश की। आज सुधा 41 वर्ष की है तथा उसकी कड़ी मेहनत और लगन को देखते हुए उसे ग्राम रमपुरा के उपकेन्द्र खोजीपुर के अन्तर्गत आशा संगिनी के रूप में चयनित किया गया है। सुधावती के कुशल पर्यवेक्षण और सक्षम मागदर्शन में 15 आशाएं कार्यरत हैं।

सुधावती के जीवन में पुनः एक नयी शुरूआत तब हुई, जब उसको एम–सेहत, प्रीलोडेड मोबाइल ऐप मोबाइल उपलब्ध कराया गया, जिसके माध्यम से लाभार्थी आधारित, वास्तविक समय में मातृ एवं शिशु आंकडों का संकलन एवं अनुसरण में मदद मिली एवं स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं द्वारा गृह भ्रमण के दौरान परामर्श के प्रयासों को मजबूत बनाने में मदद के साथ मैनुअल, रजिस्टर और अन्य सामग्री को ले जाने की जटिलता एवं समस्या का भी निदान हुआ।

आशा संगिनी सुधावती को जो मोबाइल फोन प्राप्त हुआ है वह नई बाते जानने, नई ऊंचाइयों का सपना साकार करने तथा तकनीकी रूप से कुशल बनने एवं उसे स्मार्ट काम करने के लिए उपयोगी है। सुधावती के शब्दों में "शुरू में मुझे प्रदान किय गये मोबाइल फोन के उद्देश्यों के बारे में पता नहीं था परन्तु एम.–सेहत के उन्मुखीकरण प्रशिक्षण द्वारा सारी जानकारी प्राप्त हो गयी"।

अब सभी आशाओं को कोई भी भारी रजिस्टर एवं अन्य प्रपत्र को लाने ले जाने से राहत प्राप्त हुई हैं। प्रशिक्षण के उपरान्त सुधावती को स्मार्ट फोन से पंजीकरण, ट्रैकिंग, परामर्श, रिपोर्टिंग, स्क्रीनिंग, लाभार्थियों के रेफरल करने में मदद प्राप्त हुई एवं 235 परिवारों की डाटा एंट्री, 125 बच्चों (0–5 वर्ष) और 13 एक महीने के भीतर गर्भवती महिलाओं के अतिरिक्त सम्बन्धित आशाओं के सर्वेक्षण को पूरा करने मे मदद मिली।

सुधावती मुस्कुराते हुए कहती है श्अब सब कुछ कितना आसान हो गया है! विभिन्न ग्रामों में भ्रमण करना आसान हो गया है तथा सभी रजिस्टर, मैनुअल तथा अन्य प्रपत्र को नही ले जाना पडता है जो पहले परेशान करता था। ग्राम के किसी भी परिवार द्वारा स्वास्थ्य से सम्बन्धित सूचना मांगे जाने पर हम उन्हें अपने मोबाइल फोन के माध्यम से उपलब्ध करा देते है, जिससे प्रभावित हो कर वह हमें हमारी तकनीकी क्षमता एवं निपुणता के लिए महत्व भी दे रहे हैं।श

"अब सब कुछ इतना आसान लगता है! विभिन्न गांवो का दौरा भी आसान हो गया है, जैसे पहले गृह भ्रमण के दौरान मैनुअल, रजिस्टर और अन्य सामग्री को ले जाने मे परेशानी होती थी। अब परिवार की किसी भी जानकारी के लिए हम गर्व से अपने मोबाइल द्वारा पूछे गये सभी प्रश्नो की जानकारी प्रदान करते है। लोग हमारी क्षमताओं से प्रभावित है एवं आश्चर्य से देखते है, और अब हमें लोगों ने बहुत महत्व देना शुरू कर दिया है।"

दिल को छूने वाली :
सेहत संन्देशवाहिनी

उत्तर प्रदेश सरकार की एक अनूठी पहल "सेहत संन्देश वाहिनी" वीडियो वैन परियोजना, आर.एम.एन.सी.एच.ए को ध्यान में रख कर राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन की योजनाओं के अन्तर्गत उपलब्ध स्वास्थ्य सेवाओं एवं सुविधाओं के बारे में जनता को जागरूक करने के लिए उत्तर प्रदेश के दूरस्थ ग्रामों में सिफ्सा

सेहत संन्देशवाहिनी परियोजना, राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के अन्तर्गत उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा एक अनूठा प्रयास है, जिसके माध्यम से जागरूकता एवं विभिन्न स्वास्थ्य योजनाओं के प्रचार पर ध्यान केन्द्रित करते हुए फिल्म के माध्यम से प्रजनन, मातृ, नवजात शिशु, बच्चे और किशोर स्वास्थ्य के मुद्दों को दूरस्थ ग्रामीण लोगों को जाग्रत करते हुए उनके व्यवहार में बदलाव लाने की कोशिश है ताकि अधिक से अधिक ग्रामीण समुदायों को आकर्षित कर अधिक से अधिक स्वास्थ्य सुविधाओं का लाभ उठाने के लिए प्रेरित किया जा सके। सेहत संन्देशवाहिनी परियोजना, राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन यू0पी0 की ओर से सिफ्सा द्वारा प्रदेश के सभी 75 जिलों के 33,000 से अधिक ग्रामों में संचालित किया जा रहा है, जिनमें से फरवरी 2014 से प्रारम्भ हो कर अभी तक 20,000 से अधिक ग्रामों में कार्यक्रम का सफल संचालन सिफ्सा द्वारा कराया जा चुका है।

वर्ष 2016 में इस कार्यक्रम के सफल संचालन हेतु, पारदर्शी निविदा प्रक्रिया के माध्यम से तीन एजेंसियों का चयन किया गया और कार्यक्रम का क्रियान्वयन किया जा रहा है। प्रदेश के सभी विकास खण्डों को आच्छादित करने हेतु कुल 880 वीडियो वैन चक्रों द्वारा किया जा रहा है, जिनमें अनुसूचित जनजाति के क्षेत्रों को आच्छादित करने के लिए अतिरिक्त 60 चक्र भी शामिल है। लगभग दो घंटे का एक वीडियों फिल्म का निर्माण किया गया है, जिसमें आर.एम.एन.सी.एच.+ए की विभिन्न राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन की योजनाओं के तहत स्वास्थ्य के मुद्दों जैसे जननी सुरक्षा योजना, आशीर्वाद बाल गारंटी योजना, नियमित टीकाकरण, आपातकालीन 108 एवं 102 एम्बुलेंस सेवाओं को दर्शाया गया है। इस शो में महिलाओं के सशक्तिकरण एवं क्षेत्रीय वेक्टर जनित रोगों जैसे–दिमागी बुखार, जापानी बुखार एवं कालाजार इत्यादि परभी एक लघु वृत्तचित्र शामिल है। वीडियों वैन इस प्रकार डिजाइन किया गया है कि सभी राष्ट्र स्वास्थ्य मिशन योजनाओं की झलक वीडियों वैन की दीवारों पर देखा जा सकता है। जो गांव पिछले चक्र में सम्मिलित किये गये थे, उन्हे छोड कर प्रत्येक विकास खण्ड से 20 गांवों का चयन सम्बन्धित जिले के सी.एम.ओ. के माध्यम से किया गया है। प्रत्येक वीडियो वैन टीम में एक काउंसलर और एक ऑपरेटर होता है। शो का समय शाम में ही रखा जाता है। गांव में कार्यक्रम के पूर्व प्रचार, ग्राम प्रधान, आशा, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता, ए.एन.एम. और अन्य जमीनी स्तर के कार्यकर्त्ताओं द्वारा गृह भ्रमण एवं हैन्डबिल के वितरण के माध्यम से किया जाता है। वीडियों फिल्म के समाप्त होने पर काउंसलर द्वारा एक प्रश्नोत्तरी का कार्यक्रम आयोजित किया जाता हैं जिसमें विजेता को पुरस्कार भी दिया जाता है। सम्पूर्ण कार्यक्रम का अनुश्रवण राष्ट्र स्वास्थ्य मिशन एव सिफ्सा के अधिकारियों द्वारा समय समय पर किया जाता है। अभी तक सेहत संन्देश वाहिनी कार्यक्रम को उत्तर प्रदेश के 20,000 से अधिक गांवों में पहुँचाया जा चुका है।

दर्शकों पर कार्यक्रम की छाप :

न्योथा ग्राम विकास खण्ड पटियाली जनपद कांसगंज से लगभग 65 कि.मी. दूर है। यह गांव सूर्यास्त के पश्चात अंधेरे में डूब जाता है, इस गांव में वर्षो से बिजली नही पहुंची है। 18 अप्रैल 2016 की शाम को जब अंधेरा हो गया तो मिथिलेश आशा बहू (मान्यता प्राप्त सामाजिक स्वास्थ्य कार्यकर्ता) जिसे गांव के निवासियों द्वारा आशा बहू के रूप में जाना जाता है, के घर के सामने करीब 450 निवासी सेहत संदेशवाहिनी, कार्यक्रम को देखने हेतु एकत्रित होते है। गांव वालो के लिए यह एक अनोखी घटना है, क्योकि इससे पहले इस तरह का कोई भी आयोजन इस गांव में नही हुआ था। शिक्षा के साथ साथ मनोरंजन युक्त लघु चित्र कथाओं के माध्यम से राष्ट्र स्वास्थ्य मिशन की परियोजनाओं तथा इससे सम्बन्धित मुद्दों को जानना एव समझना उनके लिए काफी रोचक रहा। जो महिलाएं खाना बनाने हेतु चली गयी थी वापस कार्यक्रम को देखने के लिए आ गयी। प्रश्नोत्तरी का कार्यक्रम सत्र के अन्त में काउन्सलर द्वारा उपस्थित सक्रिय भागीदारो के बीच कराया गया, जिसमें किशोर–किशोरियों ने भी बढ़–चढ़ कर भाग लिया।

सेहत संन्देशवाहिनी की टीम गांव में दोपहर 3:00 बजे पंहुच कर गांव के प्रधान से मिलने के बाद गांव में कार्यक्रम के बारे में मुनादी की तथा आशा की सहायता से गांव में घर घर जाकर हैण्डबिल का वितरण किया तथा ब्लाक प्रोग्राम मैनेजर का भी सूचित किया। गेहूं कटाई का मौसम होने के बावजूद इतनी अधिक संख्या में लोगों ने भाग लिया।

एक दर्शक अमेन्द्र ने कहा "कार्यक्रम अधिक महत्वपूर्ण है। यह केवल आज हो रहा है, जबकि कटाई अन्य दिन भी हो सकती है और हम इंतजार कर सकते हैं"

ग्राम पिहुरा, विकास खण्ड सहपउ, जनपद हाथरस में दिनांक अप्रैल 7, 2016 को आयोजित किया गया। गांव की आशा बहू–गुड्डी देवी पूरे परिवार सहित, उसकी दोनो बेटियों और पति ने शामिल होकर सेहत संन्देशवाहिनी कार्यक्रम की व्यवस्था अपने घर के पास खुले मैदान में की, जो सभी के लिए उपयुक्त थी। निर्धारित समय से पूर्व गांव के लोग कार्यक्रम स्थल पर पहुंचने लगे, पुरूषों ने खटिया पर, महिलाओं एवं किशोरियों ने दरी पर आसन ग्रहण किया जबकि किशोर ग्रुप में कार्यक्रम को देखने आये।

सेहत संन्देशवाहिनी टीम दोपहर 2:30 बजे के आस पास गांव में पहुंच कर आशा के साथ गांव के चारो ओर सभी घरों में गांव में होने वाले कार्यक्रम का प्रचार एवं हैण्डबिल का वितरण किया। उत्कृष्ट गुणवत्ता वाले ऑडियो–विजुअल लघु फिल्मों द्वारा दर्शकों को मंत्र मुग्ध कर रखा है। तीन देरी मातृ मृत्यु दर के लिए आधारित लघु फिल्म महिलाओं द्वारा वड़ी तल्लीनता से देखी गयी। आशा बहू और फिल्म में उसकी उपस्थिति का उल्लेख युवक सोनू ने कहा " देखो भाभी की बात हो रही है"। हालांकि, लगभग एक घन्टा शो देखने के बाद कई महिलाए ये कहते हुए उठने लगी कि घर का अन्य कार्य एवं खाना बनाना है। कार्यक्रम के दौरान आशा के पति ने दर्शकों को पानी पिलाया तथा आशा एवं ए.एन.एम. बहनजी ने कार्यक्रम के माध्यम से महिलाओं को रूकने के लिए प्रोत्साहित किया। कांउसलर द्वारा याद दिलाया गया कि कार्यक्रम के अन्त में प्रश्नोत्तर के दौरान विजेताओं को आकर्षक पुरस्कार प्राप्त करने के अवसर है, दर्शकों को रोकने में सहायक हुए। कार्यक्रम के अन्त में एक खुला प्रश्नोत्तरी सत्र का आयोजन कांउन्सलर द्वारा आयोजित किया गया और विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।

इसी प्रकार की भावनाओं से ओत–प्रोत और उत्साह की सूचना प्रदेश के हजारों गांवो से दर्शकों द्वारा प्राप्त हो रही है। सेहत संदेशवाहिनी कार्यक्रम का प्रदर्शन ज्यादातर दूरदराज एवं मीडिया की पहुंच से दूर गांवो में आयोजन किया जा रहा है। सेहत संदेशवाहिनी कार्यक्रम का नियमित रूप से ब्लॉक और जिला स्तर के अधिकारियों और एन.एच.एम., साथ ही मडंल और राज्य स्तर एवं सिफ्सा अधिकारियों द्वारा अनुश्रवण किया जा रहा है।

सेहत संदेशवाहिनी फिल्म ने विशेष कर महिलाओं के दिल को छू लिया है और वे इस फिल्म की कहानी में खुद का प्रतिबिम्ब देखती हैं।

Sehat Sandesh Wahini: taking villages of UP by storm!

जनसंख्या की बाढ़ ने, ग्रसे खेत उद्यान, है अकाल अब तीन का भोजन, वस्त्र, मकान।।
भोजन वस्त्र मकान, नहीं सबको मिलना है, चाहे जितनी सम्पति हो, श्रम ही करना है।।
केशव का मत यही, बढ़ावौ तुम धनसंख्या, अथवा लागो रोक, न बढ़ि पावै जनसंख्या।।

रोटी, कपड़ा, धाम से, रहै सुरक्षित लाज, खेत बाग सब घटि गये, घटि गई उपज अनाज।।
घटि गई उपज अनाज, गाँव अरू नगर बढ़ि गये, जनसंख्या के कारण, प्रगति प्रयास विफल भये।।
केशव कहै पुकारि, करौ जनसंख्या छोटी, बरना मिलि नहिं पाय, धाम कपड़ा अरू रोटी।।

— केशव स्वरूप तिवारी

सिफ्सा
SIFPSA

Om Kailash Tower, 19-A, Vidhan Sabha Marg, Lucknow-226001, Uttar Pradesh.
Ph. : 0522 - 2237497, 98, 2237540 | Fax : 0522 - 2237574
Web : www.sifpsa.org